

तृतीय दिवस

- नीतिगत मुद्दे का चयन
- लक्षित श्रोताओं का चयन
- नीतिगत लक्ष्य का निर्धारण
- सहयोगियों और विरोधियों का पता लगाना



सत्र 9 जनवकालत के चरण-नीतिगत मुद्दे, परिकल्पना एवं लक्ष्य का चयन

समय : 2 घंटे

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

एक चयनित मुद्दे के लिए जनवकालत के प्रयासों की परिकल्पना व लक्ष्य निर्धारित करने की प्रक्रिया से परिचित होना।

सत्र के विशेष उद्देश्य

- नीतिगत मुद्दे की चयन प्रक्रियाओं की समीक्षा, जिस पर पूर्व दिवस/सत्र में चर्चा हुई थी।
- जनवकालत के प्रयासों के लिए परिकल्पना व लक्ष्य की रचना करने की प्रक्रिया का वर्णन।
- पूर्व सत्र में चयनित एक मुद्दे के लिए अपनी परिकल्पना व लक्ष्य निर्धारित करें।

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 9.1 दैनिक समीक्षा	30	(30)
गतिविधि 9.2 नीतिगत मुद्दे की चयन प्रक्रिया की समीक्षा	20	(50)
गतिविधि 9.3 जनवकालत की परिकल्पना और लक्ष्य के निर्धारण की प्रक्रिया	20	(70)
गतिविधि 9.4 एक मुद्दे के लिए परिकल्पना व लक्ष्य की रचना	50	(120)

अग्रिम तैयारी

- 'परिकल्पना' व 'लक्ष्य' शब्द योजना की शब्दावली से लिए गये हैं। यह दोनों कुछ निश्चित कार्यों के परिणामस्वरूप उत्पन्न स्थिति के संदर्भ में हैं किंतु यह दोनों पूर्णतः समान नहीं हैं। इसलिए सुगमकर्ता को परिकल्पना व लक्ष्य की पहचान करने की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझना चाहिए। हो सकता है कि इस पुस्तक में दी गयी युक्तियाँ सहभागियों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए पर्याप्त न हों। यह अच्छा रहेगा कि आप इन विचारधाराओं पर अन्य साहित्य भी पढ़ लें।
- याद रखें कि परिकल्पना एक आदर्श स्थिति है और इसलिए, हम अपनी परिकल्पना के करीब तो आ सकते हैं किंतु हम इसको पूर्ण रूप से पा नहीं सकते। आप परिकल्पना व लक्ष्य की विचारधारा को सहज रूप से समझाने के लिए अन्य तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 9.1 जनवकालत के नियोजन की रूपरेखा चरण 2

संसाधन सामग्री 9.2 परिकल्पना व लक्ष्य

अन्य सामग्री

सुगमकर्ताओं के लिए सुझाव-9

गतिविधि 9.1 दैनिक समीक्षा

समय : 30 मिनट

दैनिक समीक्षा अपने तरीके से करें। (सहायता के लिए गतिविधि 5.1 देखें)

गतिविधि 9.2 मुद्दों, परिकल्पना व लक्ष्य का चयन

समय : 20 मिनट

यह गतिविधि सामान्यतः सत्र का परिचय करती है। पूर्व के सत्रों में जनवकालत के मुद्दों की पहचान हेतु कई अभ्यास किये गये हैं। इस सत्र में पूर्व दिवस की चर्चा का स्मरण किया जायेगा और फिर मुद्दे का चयन करते समय ध्यान देने योग्य बातों पर चर्चा की जायेगी।

- सं.सा. 9.1 में जो बिन्दु दिये हैं, इस सत्र की शुरुआत उनके प्रस्तुतिकरण से करें। अगर सहभागी अधिक स्पष्टता चाहते हैं तो आप सवाल जवाब के लिए थोड़ा समय भी दे सकते हैं। हालांकि, यह प्रस्तुतिकरण एक संक्षिप्त समीक्षा के रूप में अति उत्तम है।
- कुछ समय प्रश्नों व वार्तालाप के लिए भी दें। 'नीतिगत मुद्दे की पहचान' व 'जनवकालत हेतु मुद्दे का चयन' इन दोनों के बीच अन्तर पर वार्ता केन्द्रित करें। याद रखें कि कई नीतिगत मुद्दे आपको एक ही समस्या से जुड़े मिलेंगे, लेकिन जनवकालत की दृष्टिकोण से आप सब पर एक साथ काम नहीं कर सकते। आपको अपनी क्षमता के आधार पर चयनात्मक होना होगा।

गतिविधि 9.3 परिकल्पना व लक्ष्य की रचना की प्रक्रिया

समय : 20 मिनट

- पिछले सत्रों में आपने जिन मुद्दों की पहचान की थी उनमें से एक या दो मुद्दों का आगे वार्तालाप के लिए चयन करें। यदि आप दो मुद्दे ले रहे हैं तो सहभागियों को आकस्मिक तरीके से दो समूहों में बांट दें। यदि एक मुद्दे का चयन किया है तो दो समूहों में तभी बांटें यदि सहभागियों की संख्या ज्यादा है (एक समूह में 8 से ज्यादा लोग नहीं होने चाहिए)। यदि आप भिन्न समूहों का गठन कर रहे हैं तो भी सभी को एक ही मुद्दा दे सकते हैं।
- इन समूहों/सहभागियों को एक घेरे में बैठा दें और उनको अपनी आँखें बंद कर अपने 'सपने' के बारे में सोचने को कहें – वह चुने गये मुद्दे के संदर्भ में अपने कार्यों से उन्हें क्या परिणाम आर्दश रूप से चाहिए, यह 'कल्पना' पांच मिनट तक करने दें।
- उनको आँखें खोलने के लिए बोलें और अपनी कल्पना को समूह के साथ साथ बांटने को कहें। मुख्य बिन्दुओं को कागज/बोर्ड पर लिखें।
- अब सभी समूहों को एक साथ बुलायें और प्रत्येक सहभागी को बोर्ड पर जो बिन्दु आपने लिखे हैं उनको जोड़ते हुए परिकल्पना का कथन बनाने को कहें। कुछ सहभागियों को उनके द्वारा लिखे गये कथन को पढ़ने को कहें। इन पर चर्चा करें और समूह की मदद से एक या दो कथनों का चुनाव करें जो कि इच्छित दीर्घकालिक परिणाम की सही ढंग से व्याख्या करते हैं। यही परिकल्पना होगी।

- अगला प्रश्न उपर्युक्त चर्चा पर आधारित है तथा हमें पुनः समूह या समग्र चर्चा करनी होगी। अगला प्रश्न है 'हम किस प्रकार उस परिकल्पना तक पहुंच सकते हैं?' परिकल्पना तक पहुंचने हेतु कुछ माप योग्य संकेतों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें। इस विचार बिन्दु को वर्णित करने के लिए आप SMART तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं (देखें सं.सा. 9.2) यही आपका चयनित मुद्दों के लिए लक्ष्य होगा।
- इस अध्ययन के अन्त में यही बताना है कि अपनी परिकल्पना या लक्ष्यों को वर्णित या पहचानने के लिए कई प्रकार के तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है। यह भी एक तरीका है जिसको 'एप्रिंशिएटिव इनक्वायरी प्रोसेस' से लिया गया है। इस प्रक्रिया का वर्तमान में कई समूहों द्वारा विकास के क्षेत्र में प्रयोग हो रहा है। आप भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अन्य प्रभावी तरीकों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

गतिविधि 9.4 एक मुद्दे के लिए परिकल्पना व लक्ष्य की रचना

समय : 50 मिनट

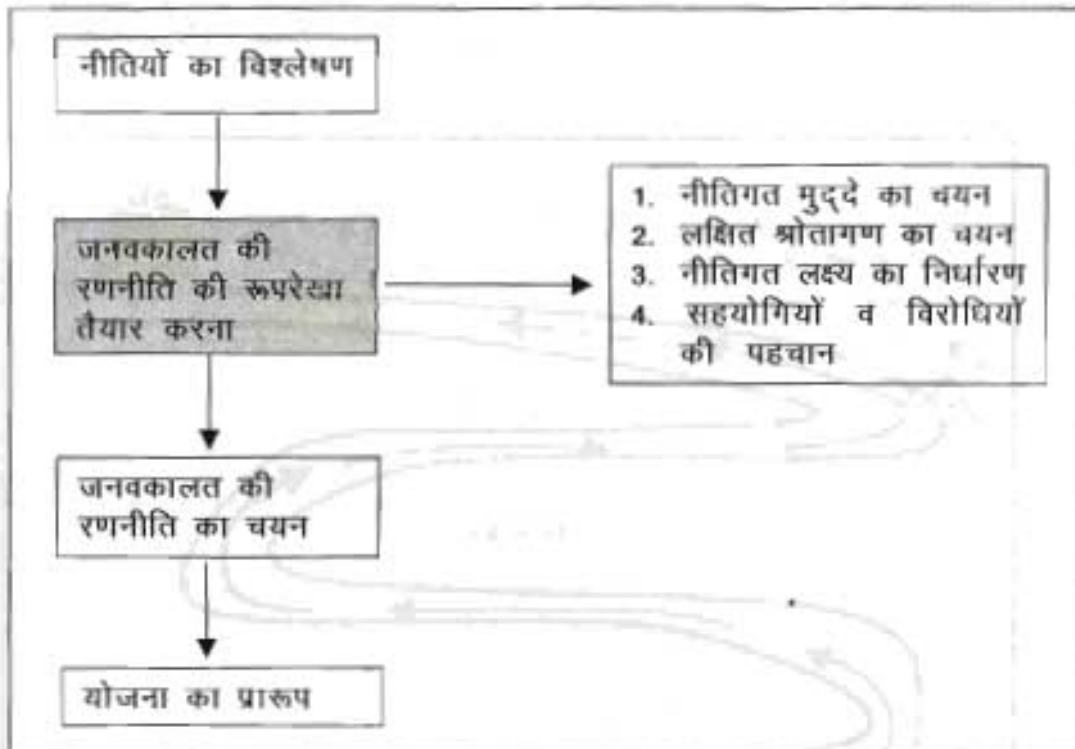
प्रतिभागियों को आकस्मिक रूप से 4 समूहों में विभाजित कर दें। यदि आपके पास पर्याप्त मात्रा में विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिभागी हों तो आप उन्हें क्षेत्रीय आधार पर भी बांट सकते हैं।

- पूर्व के वार्तालापों में जिन नीतिगत विषयों पर चर्चा हुई थी उनमें से एक सर्वसामान्य व महत्वपूर्ण मुद्दा उन्हें दें और उनके लिए परिकल्पना व लक्ष्य की रचना करने को कहें।
- उनको छोटे समूहों में वार्तालाप हेतु भेजें। उन्हें उसी प्रक्रिया को अपनाने के लिए कहें जिसके बारे में आपने बताया था। इसके बाद उन्हें संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण के लिए वापस बड़े समूह में लौटने को कहें।
- यह सुनिश्चित करें कि एक सुगमकर्ता छोटे समूहों की सहायता कर रहा है। प्रत्येक को (छोटे समूह के वार्तालाप हेतु) समय सीमा की सूचना दें।
- समग्र सत्र में हर समूह को संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण करने के लिए कहें। कोशिश यह हो कि वे लम्बे वार्तालापों व विवरणों में न जायें। उनके कथन स्पष्ट व सरल होने चाहिए।
- वार्तालाप के बाद, प्रक्रियाओं को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए परिकल्पना व लक्ष्य पर कुछ स्लाइड्स दिखायें देखें सं.सा. वाला भाग। यह प्रस्तुतिकरण आपको सत्र को समाप्त करने में मदद करेगा।
- निम्न बिन्दुओं को आप अपनी टिप्पणियों में शामिल कर सकते हैं:
 - 'परिकल्पना' (समुदायों की) वह आदर्शस्थिति है जहाँ उत्तम अभिशासन की कोई सीमाएँ नहीं होती। हम आज के युग में 'रामराज्य' की परिकल्पना तो नहीं कर सकते लेकिन हमें यह विश्वास रखना होगा कि कुछ सुधार अवश्य किया जा सकता है।
 - 'परिकल्पना' अदृश्य है तथा बहुत दूर है जब हम उसके करीब पहुंचते हैं तो हमारी अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं और हम एक नयी परिकल्पना करते हैं— पहले से भी बेहतर स्थितियों की। जबकि लक्ष्य माप योग्य होना चाहिए तथा हमारे जीवनकाल में ही उसकी प्राप्ति सम्भव होनी चाहिए। यही जनवकालत की परिकल्पना और लक्ष्य के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है।

सत्र के लिए संसाधन सामग्री-9

9.1 जनवकालत के नियोजन की रूपरेखा- चरण 2

यह ठीक उसी प्रकार का लेखाचित्र है जैसा कि सं.सा. 7.1. में प्रस्तुत किया गया है। यह सत्र दूसरे चरण पर केन्द्रित है। जनवकालत नियोजन का पहला चरण बहुत उदार था। यद्यपि, नियोजन हेतु सभी आवश्यक सूचनायें अनुमानतः पहले चरण में एकत्रित की गयी थी। किंतु बुद्धिमान जनवकालतकर्ता हमेशा किसी नयी कूटनीतिक सूचना के लिए भी तैयार रहते हैं। इस चरण से आगे नियोजन अधिक अभ्यास आधारित हो जाता है पिछले चरण में एकत्रित सूचना के आधार पर।



नीतिगत मुद्दे के चयन का आधार

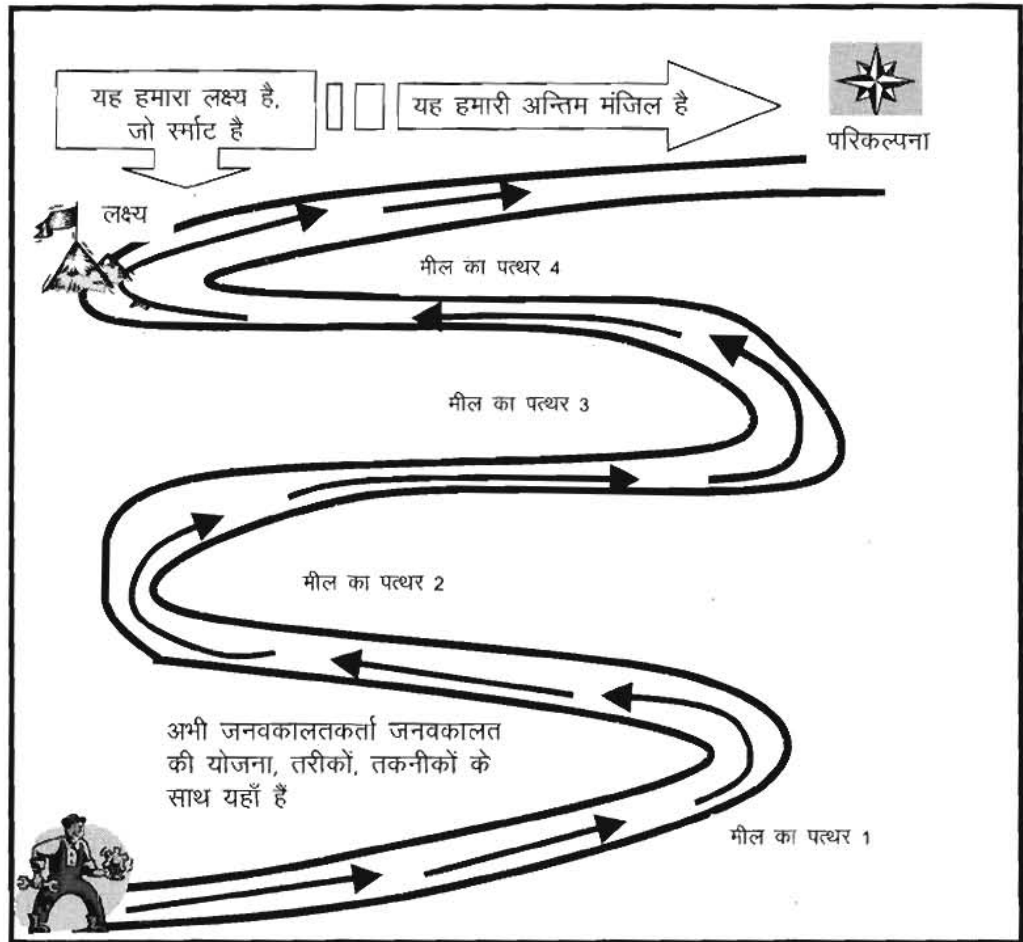
पूर्व के सत्रों में स्मरण हेतु जिन प्रश्नों पर चर्चा की गयी थी उनको आधार बनाकर हम जनवकालत के मुद्दे के चयन के विशेष आधार स्थापित कर सकते हैं। सैद्धान्तिक रूप से कुछ आधार निम्न प्रकार के हो सकते हैं। हालांकि, आप अपने संगठनात्मक दृष्टिकोण के आधार पर अपनी अलग सीमायें तय कर सकते हैं। किसी भी मुद्दे का चयन इस दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए कि उसमें हो:

- समस्या सुलझाने की ज्यादा सम्भावना
- ज्यादा संख्या में लोगों पर प्रभाव डालने की क्षमता
- सफलता की सम्भावना
- संगठित होकर कार्य करने की सम्भावना
- कम खतरा
- उस पर जनवकालत करने में आपकी संस्था सक्षम हो

9.2 परिकल्पना एवं लक्ष्य

परिकल्पना : परिकल्पना आखिरी सीमा है जहां हम पहुंचना चाहते हैं। एक समझ से यह सीमा वास्तविक नहीं है, क्योंकि यह एक आदर्श स्थिति है जिसको प्राप्त करने की चाह है। हालांकि, यह हमें दिशा मुहैया कराती है प्रक्रिया की शुरुआत करने की।

लक्ष्य: यह प्राप्तियों का वह स्तर है जो कि वास्तविक है और प्राप्त हो सकता है। जब योजना लक्ष्य से मिलती है, तब सम्पूर्ण प्राप्तियाँ हमें परिकल्पना के और पास लाती है। और यह सम्भव है कि जो कलाकार कार्यक्रम में कार्यरत है वे अब एक अधिक 'महान' और 'भिन्न' परिकल्पना कर सकते हैं, जो कि पूर्व में की गयी परिकल्पना से बढ़कर हो। विशेष रूप से, जनवकालत का एक नीतिगत लक्ष्य यह संकेत करेगा कि नीति में, व्यवहार में और जनता के सशक्तिकरण के स्तर में कितना परिवर्तन लाना है। संक्षेप में, परिकल्पना व लक्ष्य में भिन्नता निम्न प्रकार दर्शायी जा सकती है।



सभी मील के पत्थर/उद्देश्य माप योग्य संकेतों के रूप में परिभाषित किये जा सकते हैं जिनके द्वारा जनवकालत के किसी प्रयास की उन्नति का अनुश्रवण किया जा सकता है। आप प्रत्येक मील के क्षेत्र के लिए उद्देश्य बना सकते हैं। इन्हें SMART होना चाहिए, अन्य शब्दों में:

S = specific (निश्चित), M = measurable (माप योग्य), A = achievable (प्राप्ति सम्भव हो), R = realistic (वास्तविक), T = time-bound (समय सीमा के अन्तर्गत)

सत्र 10 जनवकालत के चरण- लक्षित श्रोतागण, सहयोगियों और विरोधियों का चयन

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

श्रोतागण, सहयोगियों व विरोधियों की पहचान की प्रक्रिया से अवगत होना

सत्र के विशेष उद्देश्य

- श्रोतागण व विरोधियों की पहचान की प्रक्रिया का वर्णन।
- लक्षित श्रोतागण व सहयोगियों की पहचान करते समय ध्यान देने योग्य बातों पर प्रकाश डालना।
- विरोधियों की पहचान।

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 10.1 गेंद लुढ़काने वाला अभ्यास	30	(30)
गतिविधि 10.2 समूह कार्य	45	(75)
गतिविधि 10.3 वैचारिक प्रस्तुतिकरण और चर्चा	15	(90)

अग्रिम तैयारी

- यह सत्र हमें पिछले सत्र से आगे की दिशा में बढ़ाने में मददगार है। इस अभ्यास के लिए सहभागियों को चयनित मुद्दे के विषय में अतिरिक्त सूचना की आवश्यकता होगी। यह सत्र ज्यादा लाभकारी होगा यदि, चयनित मुद्दों से सम्बन्धित नियम, कानून, दिशा निर्देश आदि, की जानकारी सहभागियों को दी जा सकें।
- एक अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण परिस्थिति में इस सत्र को जमीनी स्तर की वास्तविकता से जोड़ना कठिन होगा। उदाहरण के लिए, यदि यह प्रशिक्षण केवल *घटगाँव हिल्स ट्रैक्स* से आये सहभागियों को देना होता तो बांग्लादेश की भूमि पर वन अधिकार सम्बन्धी नियम व दिशा-निर्देश संसाधन सामग्री के रूप में उपयोगी होते।
- फिर भी, विचारों की वास्तविकता से जोड़ने के लिए अपने कार्यक्षेत्र से कुछ व्यवहारिक उदाहरण दें।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 10.1 लक्षित श्रोतागण सहयोगियों व विरोधियों का चयन।

संसाधन सामग्री 10.2 जनवकालत और श्रोतागण (विरोधी)

संसाधन सामग्री 10.3 श्रोताओं (विरोधी) का विश्लेषण

अन्य सामग्री

एक बॉलीबाल और एक अखबार के कागज से बनी एक बॉल की व्यवस्था करें।

सुगमकर्ताओं हेतु सुझाव-10

गतिविधि 10.1 गेंद लुढ़काने वाला अभ्यास

समय : 30 मिनट

- इस सत्र का प्रारम्भ आप 'गेंद को लुढ़काने' वाले खेल द्वारा करेंगे। इसका तरीका निम्न है –
 - प्रशिक्षण हाल में सभी कुर्सीयों को एक घेरे में लगाएं। खेल को समझाने के लिए एक सुगमकर्ता इस घेरे के मध्य में होगा।
 - खेल के सभी नियम साफ-साफ बताएं। सभी खिलाड़ी अपने हाथ कमर के पीछे करके बैठेंगे, प्रत्येक खिलाड़ी अपने पैर से गेंद को बिना जमीन पर गिराए, दूसरों के पैरों पर बढ़ा देगा।
 - इस खेल की शुरुवात सुगमकर्ता करेगा, वह अपने पैरों से गेंद को अपनी बायीं ओर बैठे सहभागी को देगा। पहले इस खेल को केवल बॉलीबॉल के साथ खेला जाएगा और कुछ समय पश्चात सुगमकर्ता कागज की गेंद को अपनी दायीं ओर बढ़ा देगा।
 - एक व्यक्ति की नियुक्ति करें जो यह देख सके कि खेल नियमों के अनुसार हो रहा है या नहीं। यदि इस सत्र का संचालन एक ही सुगमकर्ता कर रहा है तो सहभागियों में से दो व्यक्तियों को इस कार्य के लिए चयनित करें।
 - एक निश्चित बिन्दु पर दो गेंदे आपस में एक-दूसरे के पास से गुजरेगी। इस बिन्दु को ध्यान से देखना है। यहाँ यह देखना है कि, जो दो खिलाड़ी एक दूसरों की तरफ गेंद बढ़ा रहे थे उनकी सहायता या अवरोध करने में अन्य खिलाड़ियों की क्या भूमिका थी?
 - इसके ठीक बाद खेल बन्द कर दें।
- याद रखें कि इस खेल का पूरा लाभ आपकी इस बात पर निर्भर है कि आप खेल के बाद किस प्रकार का वार्तालाप प्रारम्भ करते हैं और आप कितनी कुशलता से इस खेल की घटनाओं और लक्ष्य, एक विरोधियों व सहयोगियों के चयन की प्रक्रिया के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

यदि सुगमकर्ता इससे खेल के और चर्चा के विषय के बीच सम्बन्ध नहीं दर्शा पाता है तो सहभागी इस खेल को मात्र मजाक ही समझेगा। यदि आप इस खेल का ठीक प्रकार से लाभ नहीं उठा सकते तो यह खेल मात्र समय की बर्बादी होगी। इसलिए, सुगमकर्ताओं के लिए यह सुझाव है कि उनको सहभागियों को समझाने के लिए तथा प्रश्नों के उत्तर देने के लिए पहले से पूरी तैयारी करनी चाहिए। खेल पर चर्चा के खेल के बाद उसी स्थान पर बैठ कर होनी चाहिए।

यह आवश्यक है कि सभी सुगमकर्ता बारी-बारी से खेल के बाद अपने विचार व्यक्त करें। सुगमकर्ता खेल में स्वयं शामिल था और सहभागियों के साथ बैठा था वह वार्तालाप का प्रारम्भ कर सकता है और अन्य सुगमकर्ता जो खेल में शामिल नहीं थे, खड़े थे, वे भी अपने विचार इसमें जोड़ सकते हैं।

विभिन्न सुगमकर्ता अलग-अलग स्थानों पर यह खेल खेलने के अपने अनुभवों को बाँटेंगे। आप उदाहरण के रूप में खेल की सफलताओं को बता सकते हैं। किन्तु, सुगमकर्ताओं द्वारा कही गयी बातें परस्पर विरोधी नहीं होनी चाहिए।

गतिविधि 10.2 समूह कार्य

समय : 45 मिनट

- सहभागियों को आकस्मिक तरीकों द्वारा चार समूहों में बांट दें। पूर्व में चयनित मुद्दों व पहले बनायी गयी परिकल्पना व लक्ष्य पर पुनर्विचार करें। समूहों को कहें कि वे इन मुद्दों व लक्ष्यों का आधार पर (अ) लक्षित श्रोतागणों की सूची बनायें - प्राथमिक एवं द्वितीयक (ब) सम्भावित सहयोगियों की सूची बनायें, और (स) सम्भावित विरोधियों की सूची बनायें।
- जब सहभागी छोटे समूहों में जाये तो उन्हें सं.सा. 10.2 और सं.सा. 10.3 की प्रतियाँ दें जिससे छोटे समूहों में वार्तालाप में सुविधा मिलेगी। समूह कार्य की समाप्ति पर समूहों से कहें कि वह अपने परिणामों को प्रशिक्षण हाल के अलग-अलग कोनों में दर्शित करें ताकि अन्य सहभागी भी उसे देख सकें।
- कुछ समय इस पर व्यतीत करने के बाद, आप सभी सहयोगियों से समग्र सत्र में आने के लिए कहें और एक संक्षिप्त वार्तालाप प्रारम्भ करें। आप वार्तालाप को कई प्रश्नों द्वारा प्रारम्भ कर सकते हैं जैसे कि:
 - क्या लक्षित श्रोताओं, सहयोगियों और विरोधियों की पहचान आसान है?
 - फील्ड में इस प्रकार पहचान करने और प्रशिक्षण सत्र में यह करने के बीच क्या अन्तर है (यदि कोई है)?
 - इन विभिन्न व्यक्तियों के समूहों की पहचान करने में आपकी सामूहिक चर्चा कितनी सहायक थी?
 - क्या आपका लघु समूह कुछ अदृश्य या छुपे हुए श्रोताओं या विरोधियों की पहचान कर पाया?

गतिविधि 10.3 प्रस्तुतिकरण एवं वार्तालाप

समय : 15 मिनट

- श्रोताओं, सहयोगियों व विरोधियों की पहचान हेतु विभिन्न युक्तियों को प्रस्तुत करें जैसा कि सं. सा. 10.1 में वर्णित है। प्रस्तुतिकरण के बाद आप एक लघु वार्तालाप कर सकते हैं जो कि निर्धारित समय तक जारी रह सकता है।
- कुछ व्यावहारिक उदाहरण विरोधियों के विषय में दें। आप वैचारिक स्पष्टता के लिए विश्लेषण के विचार पर भी चर्चा कर सकते हैं।
- कुछ अन्तिम टिप्पणियों द्वारा सत्र का समापन करें। इस तथ्य पर जोर डालें कि अदृश्य विरोधियों की पहचान सबसे मुश्किल कार्य है।

याद रखें कि लक्षित श्रोताओं और विरोधियों के बीच में कई समानतायें हैं। कभी-कभी व्यक्ति-विशेष लक्षित श्रोता के साथ-साथ विरोधी भी होता है। यह मुद्दे या सन्दर्भ पर निर्भर करता है।

10.1 लक्षित श्रोतागण, सहयोगियों और विरोधियों का चयन

लक्षित श्रोता

जनवकालत तब तक सम्भव नहीं है जब तक निश्चित लक्षित श्रोताओं की पहचान नहीं होती। यह लक्षित श्रोता सामान्य रूप से दो भागों में बांटे जा सकते हैं : (अ) प्राथमिक श्रोता (ब) द्वितीयतक श्रोता। प्राथमिक श्रोता वह व्यक्ति हैं जिनको नीति में बदलाव करने के अधिकार प्राप्त हैं। जनवकालत की रणनीति में प्राथमिक श्रोता, को नीतिगत मुद्दे के विषय में सूचित करना/विश्वास दिलाना जनवकालत की रणनीति का केन्द्रीय भाव है। द्वितीयतक श्रोता वे लोग हैं जो प्राथमिक श्रोताओं के निर्माण को प्रभावित कर सकते हैं, यद्यपि उनके पास निर्णय लेने का सीधा अधिकार नहीं होता।

सहयोगी

सहयोगी वे व्यक्ति या संगठन होते हैं जिनको एक जनवकालत समूह अपने साथ जोड़ सकता है, किसी मुद्दे पर साथ मिलकर काम करने के लिए। दूसरे शब्दों में, सहयोगी (समान विचार वाले) संगठन या व्यक्ति होते हैं। नीचे दिये गये प्रश्न कुछ दिशा निर्देश देते हैं, जनवकालत के लिए उचित सहयोगियों की पहचान हेतु।

- कौन से संगठन समूह या व्यक्ति सम्बन्ध रखते हैं या पहले से ही कार्यरत हैं, समान नीतिगत मुद्दे पर?
- क्या गठजोड़ पहले से ही अस्तित्व में हैं या उनकी स्थापना करनी होगी?
- हम किस प्रकार अन्य संगठनों के प्रयासों में सहयोग कर सकते हैं?
- यह संगठन आपकी क्या भूमिका चाहते हैं आपसे किस तरह के सहयोग की आशा करते हैं?
- इनके साथ सहयोग स्थापित करने में क्या लाभ व हानि है?
- क्या वह 'हमारे विरोधियों के विरोधी हैं' जो कि हमारे मुद्दे में रुचि नहीं रखते लेकिन जो उन विरोधियों पर वे 'हावी होना चाहते हों जिनको हम मात देना चाहते हैं और/या प्रभावित करना चाहते हैं— और क्या हम उनके साथ कार्य कर सकते हैं अपनी पहचान या विश्वसनीयता को खोये हुए बिना?
- क्या अन्य संगठन आपको उनके प्रयासों को बढ़ावा देने वाले सहयोगी के रूप में देखते हैं?

गठबन्धन/गठजोड़ के द्वारा जनवकालत को लाभ

एक गठबन्धन या गठजोड़ संगठनों का समूह होता है (व्यक्तियों का भी), जो कि, एक समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए (साथ-साथ काम करते हैं)। एक गठबन्धन या गठजोड़ के निम्नलिखित लाभ हैं:

- इससे संसाधन, अनुभव, विश्वसनीयता और प्रत्यक्षता बढ़ती है
- ताकत बढ़ाने से नीति परिवर्तन पाने में सफलता की सम्भावना बढ़ती है

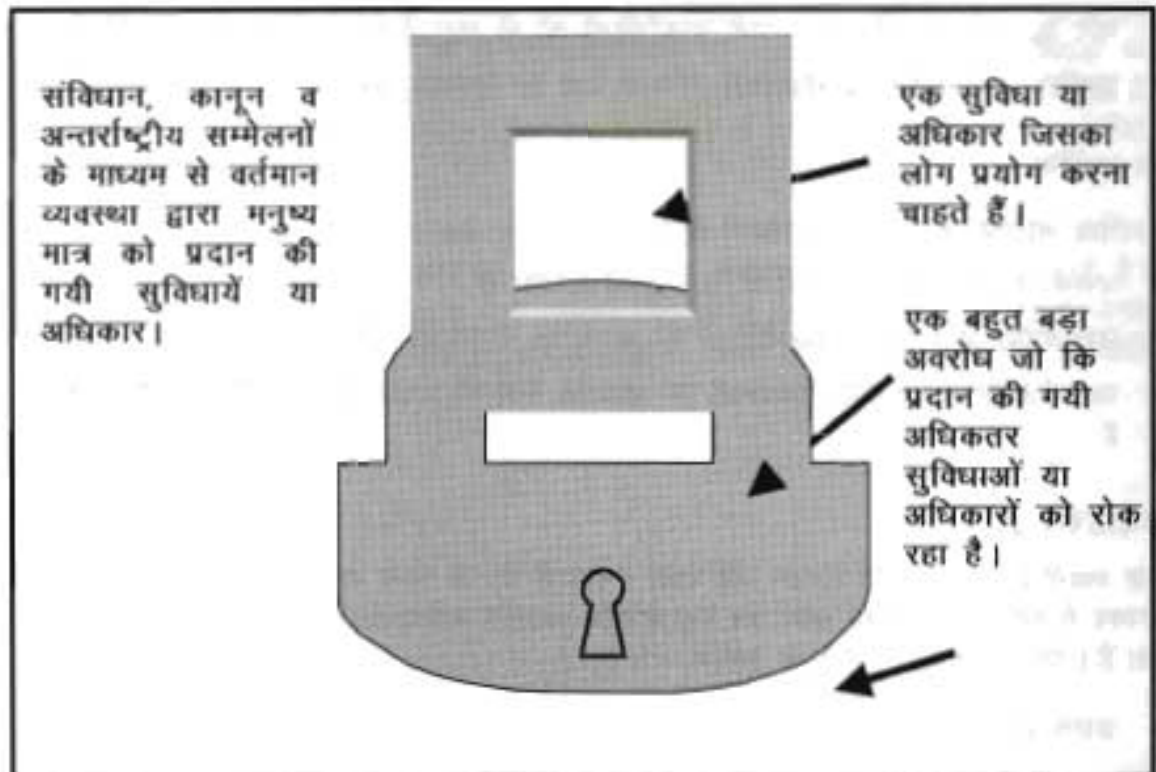
- गठजोड़ के कम अनुभवी सदस्यों में जनकालत की क्षमता विकसित होती है
- बचाव के कारक प्राप्त होते हैं या (संख्या में सुरक्षा होती है)
- इसके द्वारा गठबन्धन के सदस्यों को भिन्न मुद्दों पर भी जनकालत करने का विश्वास व उत्साह मिलता है।

विरोधी

विरोधी व व्यक्ति या संगठन होते हैं जो कि आपके परिवर्तन के विचारों का विरोध करते हैं। यदि कहीं विरोधी नहीं है तो आपको कोई भी जनकालत का प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं है। हालांकि, वास्तविकता में, विरोधी हमेशा होते हैं। आपके लक्षित श्रोता भी मजबूत विरोधी हो सकते हैं। अपने विरोधियों को अच्छी तरह से समझने के लिए हमें पूरी सामाजिक संरचना के विश्लेषण की जरूरत है जिसमें कि उपेक्षा/बंधना पनप रही है। निम्न प्रश्नों द्वारा हमें विरोधियों को पहचानने की व उनको परास्त करने की दिशा में मदद मिलेगी।

- क्या कुछ ऐसे संगठन या व्यक्ति हैं जो प्रस्तावित नीति परिवर्तनों का विरोध करते हैं?
- वह किन कारणों से विरोध कर रहे हैं उनका क्या नुकसान है?
- यह संगठन या व्यक्ति हमारे जनकालत के प्रयासों की सफलता को किस प्रकार खतरा पेश करते हैं?
- अपने विरोधियों के प्रभाव को कम करने के लिए हमें क्या कर सकते हैं?

10.2 जनकालत और श्रोता (विरोधी)



10.3 श्रोताओं का विश्लेषण (विरोधी)

जनता को जो सुविधायें कानून द्वारा मिली हैं, उनके मार्ग में कई अवरोध हो सकते हैं। जनवकालत की शब्दावली में इन अवरोधों को विरोधी कहा गया है। जो विरोधी हमारे सामने हैं उनकी शक्ति के भिन्न स्रोत हो सकते हैं दो उदाहरण नीचे दिये गये हैं:

उदाहरण 1

एक गाँव का नेता गाँव की सामान्य जनता के अधिकारों को मान्यता नहीं देता, जबकि वह अपने सम्बन्धी/मित्रों के अधिकारों की पूर्ति करता है। वह नेता ऐसा करने में सक्षम है क्योंकि :

- नेता का कोई रिश्तेदार किसी बड़े राजनीतिक दल में सक्रिय है
- उक्त नेता के वरिष्ठ नेताओं से अच्छे सम्बन्ध हैं
- उन वरिष्ठ नेताओं के ऐसे नेताओं से अच्छे सम्बन्ध हैं जिनके पास अधिकारिक शक्ति या सत्ता है
- सत्तारूढ़ राजनैतिक दल नौकरशाहों को अपने पक्ष में कर उनसे अपने हित के कार्य करा रहा है
- इस प्रकार नौकरशाह खुशी से गाँव के नेता के पक्ष में काम कर रहे हैं

या क्योंकि

- गाँव के नेता के व्यापारी लोगों से अच्छे सम्बन्ध या साझेदारी हो
- यह व्यापारी नौकरशाहों को चतुराई से अपने पक्ष में कर लेते हैं
- यदि आवश्यक हो तो यह व्यापारी राजनीतिज्ञों को भी चतुराई से अपने पक्ष में कर लेते हैं
- इसलिए, राजनीतिज्ञ एवं नौकरशाह गाँव के नेता का सहयोग कर रहे हैं

या क्योंकि

- नेता का एक बेटा सरकारी नौकरी में है
- उसके किसी वरिष्ठ अधिकारी के साथ अच्छे सम्बन्ध हैं
- उस वरिष्ठ अधिकारी ने राजनीतिज्ञों को अपने पक्ष में कर रखा है
- यह राजनीतिज्ञ स्थानीय नौकरशाही को गाँव के नेता की मदद करने के लिए प्रभावित कर रहे हैं

उदाहरण 2

एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन यह दावा करता है कि वो बिना लाभ के कार्य करता है जबकि वास्तव में वह लाभ के लिए कार्य कर रहा है और स्थानीय अभिशासन के आचरण की अनदेखी कर रहा है। वह यह सब कर पाता है क्योंकि :

- उसने बड़े दाताओं से बहुत अच्छे सम्बन्ध बना रखे हैं
- दाताओं के उच्च स्तर के सरकारी अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध हैं

- इन सम्बन्धों के कारण सरकारी अधिकारी यह सोचते हैं कि यह गैर सरकारी संगठन बहुत अच्छा है, चाहे वह कुछ भी क्यों न करता हो
- जरूरत पड़ने पर यह सरकारी अधिकारी तुरन्त स्थानीय अधिकारियों को उक्त संगठन की मदद करने के लिए कहेंगे
- इसलिए, उक्त संगठन को स्थानीय स्तर पर लोगों का विश्वास प्राप्त करने की जरूरत महसूस नहीं हो रही।

या क्योंकि

- उसको बड़े ट्रस्ट व कम्पनी आदि से पर्याप्त धन प्राप्त हो रहा हो
- उक्त संगठन को यह लगता है कि उसको गरीबों से कुछ प्राप्त नहीं करना
- ट्रस्ट या कम्पनी उक्त संगठन द्वारा अपने व्यापार को बढ़ाने दे रहे हैं
- नेताओं को प्रतिष्ठा की जरूरत होती है
- सरकारी अधिकारी व स्थानीय नेता निजी लाभ के लिए अपने सम्बन्धियों को नौकरी दिलवाने के लिए संगठन से जुड़े हुए हैं
- यह संगठन इस योग्य है कि वह किसी भी प्रकार की ताकत को अपने पक्ष में कर सकता है
- इसलिए वह यह अनुभव करता है कि जनता की आवाज की अनदेखी कर के भी वह सुरक्षित है

जनवकालत का उद्देश्य उन अवरोधों को हटाना है, जो कि उपेक्षित समूहों को उन सुविधाओं व अधिकारों को पाने से बाधित रखते हैं जिनको कानून व व्यवस्था के तहत सभी व्यक्तियों को प्रदान किया गया है। यदि कोई भी अवरोध न हो तो जनवकालत की आवश्यकता नहीं है। सुविधाओं या अधिकारों के अवरोध, चाहे वह व्यक्तिगत हो या संस्थागत, हो जनवकालत के प्रयासों के विरोधी हैं इसलिए, बुद्धिमानों यह है कि जनवकालत द्वारा जिन विरोधियों से लड़ना है उनकी संख्या व शक्ति का आकलन करें।

एक मजबूत विरोधी से लड़ने के लिए हमें अच्छी तरह से तैयारी करनी होगी। एक मजबूत अवरोध को तोड़ने में लम्बा समय भी लग सकता है। कुछ मुद्दों पर, जनवकालत असफल भी हो जाती है। अवरोध केवल व्यक्तिगत सोच के कारण नहीं उत्पन्न होते अपितु यह विवादस्पद कानून व ऊपर के दिशा निर्देशों के कारण भी हो सकते हैं। जनवकालत के प्रयास और अधिक चुनौतिपूर्ण हो जाते हैं, अगर अवरोध कानून से सम्बन्धित हों, ऐसे में सफलता की सम्भावना भी कम हो जाती है।

विषय 10-11

जनवकालत के चरण-गठबन्धन का निर्माण और नेटवर्किंग

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

जनवकालत के प्रयासों के लिए गठबन्धन का निर्माण और नेटवर्किंग की प्रक्रिया से परिचित होना।

सत्र के विशेष उद्देश्य

- जनवकालत में गठबन्धनों के महत्व का वर्णन
- नेटवर्किंग के महत्वपूर्ण तथ्यों की पहचान
- गठबन्धनों व नेटवर्किंग के बीच अन्तर दर्शाना

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 11.1 गठबन्धन की आवश्यकता व प्रकार	30	(30)
गतिविधि 11.2 अच्छे गठबन्धन हेतु ध्यान देने योग्य बिन्दु	30	(60)
गतिविधि 11.3 गठबन्धन व नेटवर्क में अन्तर	30	(90)

अग्रिम तैयारी

- यदि आप विभिन्न देशों से गठबन्धन व नेटवर्क के उदाहरण तैयार करते हैं तो यह सत्र को मजबूती प्रदान करेगा। आप इन उदाहरणों को हैण्डआउट के रूप में बाँट सकते हैं जो कि, सहभागियों की जानकारी बढ़ाने व भविष्य में प्रशिक्षण आयोजित करने में मददगार होगा
- इस सत्र में वास्तविक अनुभवों के आधार पर कुछ संर्दभ दें। यदि आप यह संर्दभ नहीं दे पाते हैं तो कम से कम सहयोगियों का मार्गदर्शन करें कि वह स्वयं ही यह ढूँढ सकें।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

- संसाधन सामग्री 11.1 गठबन्धन/गठजोड़ और व नेटवर्क का निर्माण
- संसाधन सामग्री 11.2 गठबन्धन व नेटवर्क में अन्तर

अन्य सामग्री

गतिविधि 11.1 गठबन्धन की आवश्यकता व प्रकार

समय : 30 मिनट

आप इस सत्र का प्रारम्भ एक नाटक द्वारा कर सकते हैं जो कि एक काल्पनिक परिस्थिति में कार्य कर रहे स्थानीय गैर सरकारी संगठन पर आधारित है। नाटक का स्वरूप निम्नवत होगा-

एक सरकारी अधिकारी जो कि किसी निश्चित नीति में बदलाव लाने के लिए जिम्मेदार है, एक कुर्सी पर बैठा है उसके सामने मेज पर कुछ फाइलें फँसी हुई हैं।

कुछ गैर सरकारी संगठनों और सामुदायिक संगठनों के लोग नीतिगत बदलाव लाने के लिए उससे मिलने आते हैं। शुभकामनाओं के बाद वह ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों यानिकी कार्यक्रम में नीतिगत बदलाव लाने के बारे में बात करते हैं।

वह यह बताते हैं कि यह मीटिंग पूर्व नियोजित थी तथा इस प्रतिनिधि मण्डल को इस मुद्दे पर घर्षा के लिए बुलाया गया था।

वार्तालाप कुछ देर तक चलता है। अन्त में, सरकारी अधिकारी निम्न बातें कहता है-

- मैं आप जैसे विभिन्न संगठनों के लोगों से मिल रहा हूँ।
- सभी पर्वतीय वनों के प्रबन्धन के विषय में विभिन्न नीतिगत प्रस्ताव ला रहे हैं।
- उदाहरण के लिए, उनमें कुछ लोग कह रहे हैं कि पर्वतीय वन सरकार द्वारा संरक्षित होने चाहिए, जबकि आप जैसे कुछ लोग कह रहे हैं कि यह अधिकार व जिम्मेदारी जनता को दी जानी चाहिए।
- इन सभी प्रतिनिधि मण्डलों से मिलकर मैं यह निष्कर्ष निकाल रहा हूँ कि आप लोग आपस में नहीं मिल रहे हैं और अपने विचार एक दूसरे के साथ नहीं बांट रहे हैं।
- जब तक आप अलग-अलग प्रस्ताव लाते रहेंगे, हम कुछ भी नहीं कर सकते और स्थिति जस की तस ही रहेगी।
- इसलिए मेरा सुझाव है कि आप लोग एक विचार या प्रस्ताव लेकर आये, तब हम इस पर विचार कर सकते हैं।

गैर सरकारी संगठन और सामुदायिक संगठन यह दर्शाते हैं कि उनके पास इस प्रतिक्रिया के लिए कोई तर्क नहीं है और वह चले जाते हैं।

इस नाटक में सरकारी अधिकारी की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। उक्त व्यक्ति को सावधानीपूर्वक तैयार करें। उनको इस योग्य होना चाहिए कि वह यह दर्शा सकें कि नागर समाज संगठनों में एकता की कमी है और इच्छित बदलाव लाने के लिए वे संयुक्त रूप से संगठित नहीं हैं। जब तक किसी समान विषय के लिए एक समान आवाज नहीं उठेगी तब तक जनवकालत सफल नहीं हो सकती।

इस नाटक को इस कार्यशाला के लिए बनाया गया है किंतु यह जरूरी नहीं कि आप इसी का प्रयोग करें। सुगमकर्ता स्थानी संदर्भ के आधार पर दूसरे नाटक भी बना सकते हैं। यह सुनिश्चित

करना अति आवश्यक है कि, नाटक यह संदेश स्पष्ट रूप से दे कि बदलाव की चाह रखने वाले, विभिन्न समूहों में आपसी एकता के बिना ज्यादा कुछ हासिल नहीं हो सकता।

- नाटक की समाप्ति पर सहभागियों से कई प्रश्न पूछें, जैसे कि, 'आपने इस नाटक में क्या देखा? क्या यह कई देशों के वास्तविक जीवन की स्थितियों के अनुरूप है? हम इससे क्या सीख सकते हैं?'
- कुछ सहभागियों को सुनने के बाद प्रश्नों की दूसरी कड़ी पूछें, जैसे कि, 'क्या ऐसी स्थिति में जनवकालत सम्भव है? क्या एक अकेला संगठन जनवकालत कर सकता है? क्या होता है जब एक अकेला संगठन नीतिगत या व्यावहारिक बदलाव के लिए स्वयं ही जनवकालत का प्रयास करता है और अन्य लोगों को इस प्रयास में शामिल करने की चेष्टा नहीं करता?'
- जो भी विचार बिन्दु सहभागियों द्वारा आ रहे हैं उन्हें बोर्ड पर लिखना चाहिए— आप सत्र के विषय से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं या शब्दों को लिख सकते हैं— यानि कि जो गठबन्धन की आवश्यकता को दर्शाते हों।
- अन्ततः सं.सा. 11.2 की प्रस्तुति करें जो जनवकालत में गठबन्धन की आवश्यकता को स्पष्ट करती है। इन बिन्दुओं को समग्र चर्चा के दौरान सहभागियों द्वारा व्यक्त विचारों से जोड़ें।

गतिविधि 11.2 अच्छे गठबन्धन हेतु ध्यान देने योग्य बिन्दु

समय : 30 मिनट

सहभागियों को बतायें कि पूर्व के सत्र के द्वारा हमें प्रभावी जनवकालत के लिए गठबन्धन का महत्व समझ आया है। हम इस निष्कर्ष पर भी पहुंचे हैं कि एकाकी प्रयास से जनवकालत सम्भव नहीं है। यदि यह सत्य है, तो हम किस प्रकार गठबन्धन का विकास कर सकते हैं? इस पर चर्चा हेतु कुछ समय दें।

- 'गठबन्धन बनाने हेतु ध्यान देने योग्य बातें,' सं.सा. 11.1 से प्रस्तुत करें। यह सुनिश्चित करें कि आप फील्ड के विभिन्न उदाहरण दें।
- यदि समय हो तो सत्र को समग्र चर्चा के लिए खोल दें। चर्चा का प्रारम्भ इस प्रश्न से करें, 'क्या बहुत सी संस्थाएँ इन बातों पर ध्यान देती हैं— खासतौर पर वह गैर सरकारी/सामाजिक संगठन जिनके बारे में हम जानते हैं? बहुत से गैर सरकारी संगठन अकेले ही क्यों कार्य करते हैं? अगर गठबन्धन नहीं बनाये जा रहे तो इसके पीछे क्या कारण हैं? क्या हम इन कमियों को दूर कर सकते हैं? इन सब प्रश्नों को सोचना होगा।

गतिविधि 11.3 गठबन्धन व नेटवर्क के बीच अन्तर

समय : 30 मिनट

- सं.सा. 11.2 का प्रयोग करते हुए गठबन्धन व नेटवर्क के बीच अन्तर प्रस्तुत करें। सफल गठबन्धनों व नेटवर्कों के कुछ उदाहरण दें। यदि आपके पास इस प्रकार के कुछ उदाहरणों की सूची है तो आप एक लघु प्रदर्शन चार्ट तैयार कर सकते हैं।
- अपने प्रस्तुतिकरण के बाद सहभागियों से पूछें कि क्या वे प्रस्तुत विचार बिन्दुओं से सहमत हैं या नहीं। यदि चर्चा के दौरान इस विषय पर किसी प्रकार का विवाद होता है तो यह बतायें कि इन दो शब्दों के बीच कोई स्पष्ट या परोक्ष अन्तर नहीं है। किसी विशेष कार्य के लिए बने एक

अच्छे गठबन्धन को बाद में नेटवर्क में बदला जा सकता है। उसी प्रकार से एक अच्छा नेटवर्क भी कुछ मुद्दों के लिए एक अच्छा गठबन्धन हो सकता है।

अन्त में, सत्र का समापन करें। निम्न युक्तियाँ समापन में आपकी मदद कर सकती हैं :

- गठबन्धन तो जनवकालत का एक अभिन्न अंग है। यदि जनवकालतकर्ता एक मंच पर नहीं आ सकते तो यह समझा जा सकता है कि वे प्रभावशाली ढंग से जनवकालत नहीं कर पायेंगे।
- सफल जनवकालत के परिणामस्वरूप व्यापक सुधार आते हैं इसलिए इन सफलताओं को प्राप्त करने के लिए **व्यापक** भागीदारी भी आवश्यक है।
- जनवकालत की तुलना फुटबाल के खेल से की जा सकती है। यदि एक टीम दर्शकों का दिल जीत लेती है तो इस टीम को बहुत बड़ा सम्बल दर्शकों से मिलता है। जो कि टीम के सदस्यों को उत्साहित करता है। अन्ततः, यह स्थिति सफलता की ओर बढ़ाती है।



11.1 गठबन्धन/गठजोड़ और नेटवर्क का निर्माण

एक गठबन्धन/गठजोड़ संगठनों का एक समूह है जो एक समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संयुक्त रूप से काम करते हैं। गठजोड़ किसी विशेष आन्दोलन या घटना के लिए बनायी जा सकता है। जबकि, एक नेटवर्क संगठनों का समूह है जो कि सदस्यों के समान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाया जाता है।

महत्व : एक लोकतान्त्रिक समाज में कई संगठनों को एक साथ लाना बहुत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से जनता के सशक्तिकरण व नीतिगत बदलाव जनवकालत के लिए। निम्न बिन्दु कुछ विशेष कारणों पर प्रकाश डालते हैं कि गठबन्धन एवं नेटवर्क क्यों महत्वपूर्ण हैं।

- समान कार्य कम खर्चीला हो जाता है
- संसाधन और विशेषज्ञता बांटे जा सकते हैं
- दोहरेपन की सम्भावना को कम करता है
- ज्यादा शक्तिशाली होते हैं

ध्यान देने योग्य तत्व

हालांकि, हम गहराई से देखें तो ज्ञात होगा कि यह बहुत ही गूढ़ विषय है। निम्न संकेत इस प्रक्रिया को बढ़ावा देने/व्यवस्थित करने में मदद करेंगे।

- संगठनात्मक स्तर पर स्वयं की समीक्षा – पारदर्शिता, सामाजिक न्याय और सहभागिता
- संगठनात्मक विश्वसनीयता की समीक्षा – क्या अन्य संगठन उस पर विश्वास करते हैं या नहीं
- व्यक्तिगत विश्वसनीयता की समीक्षा – क्या व्यक्ति विशेष विश्वास करने योग्य हैं या नहीं
- समानता खोजने हेतु सभी सम्भावित सदस्यों की परिकल्पना व लक्ष्य की समीक्षा और समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वधनबद्धता के न्यूनतम स्तर का निर्धारण एवं उस पर करार

एक व्यक्ति या एक संगठन किसी एक क्षेत्र में प्रभावशाली हो सकते हैं लेकिन सभी जगह नहीं। एस.ई.डब्ल्यू.ए. (सेवा) (सेल्फ-इम्प्लाइड वूमैन्स असोसिएशन) गुजरात में, एन.सी.ए.एस. दक्षिणी भारत में एफ.ई.सी.ओ.एफ.यू.एन. (फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी फॉरेस्ट यूजर ग्रुप्स नेपाल) नेपाल में आदि का उदाहरण लिया जा सकता है। यदि ये संगठन, अन्य संगठनों से सम्पर्क करते हैं जो कि अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहे हैं, तो यह और मजबूत बन सकते हैं। गठजोड़ का अर्थ है, समान आवाज विभिन्न कानों से उठाने की क्षमता। यह नीति बनाने वालों को सुनने के लिए बाध्य करता है। कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं :

सेवा, गुजरात, भारत: बेरोजगार महिलाओं के बीच समन्वय व भागीदारी स्थापित करने में सेवा गुजरात की अग्रणी भूमिका है। यह बेरोजगार महिलाओं की आवाज उठाती है और उनको विकास की विभिन्न गतिविधियों से जोड़ती है। हालांकि, यह कार्यशीली अभी तक प्रभावशाली रूप से अरूणाचल नहीं पहुंची है।

सी.ए.एन., मेघालय, भारत : मेघालय के ग्रामीण युवकों के एक समूह ने एक छोटे से नेटवर्क की शुरुआत की है। जिसको *सेन्टर फॉर एडवोकेसी एंड नेटवर्किंग* के नाम से जाना जा है (सी.ए.एन.)। इसका उद्देश्य है गरीबों के लिए आवाज को उठाना। हालांकि, यह लोग नागालैण्ड के साथ सम्पर्क में नहीं हैं, जहां पर भी इस प्रकार की समस्या है।

एफ.ई.सी.ओ.एफ.यू.ए.एन., नेपाल: *फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी फॉरेस्ट यूजर ग्रुप्स नेपाल* यह वनों पर लोगों के अधिकारों के सम्बन्ध में आवाज उठा रहा है। किंतु इनके कार्य के बारे में जल सम्बन्धी एवं महिलाओं सम्बन्धी मुद्दों पर कार्य कर रही संस्थाओं को नहीं पता।

नेपाल में बन्धुआ मजदूरी : बन्धुआ मजदूर आन्दोलन बहुत प्रसिद्ध है कम से कम नेपाल में। इस आन्दोलन में कई संगठन ने एक गठबन्धन के तहत कार्य किया। किंतु इनका कार्य सही तरीके से दूसरे संगठनों के साथ नहीं बाँटा जा सका जो कि अन्य सम्बन्धित मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं।

11.2 गठबन्धन/गठजोड़ और नेटवर्क में अन्तर

गठबन्धन व नेटवर्क में अन्तर कर पाना बहुत कठिन कार्य है। ऐसा कोई भी निश्चित सिद्धान्त नहीं है जिसके आधार पर इन दोनों विचारों में अन्तर किया जा सके। हालांकि, व्यावहारिक अनुभव के आधार पर निम्नलिखित अन्तर बताये गये हैं।

मापदण्ड	गठबन्धन/गठजोड़	नेटवर्क
उद्देश्य	थोड़े समय के उद्देश्य हेतु गठित	दीर्घकालिक उद्देश्य हेतु
क्षेत्र विस्तार	विस्तृत क्षेत्र	भौगोलिक सीमित क्षेत्र
कार्य विस्तार	एक विशेष कार्य योजना	बहुद्देशीय कार्य योजना
संख्या	कई संगठन	कम संख्या में संगठन
समानता	मुद्दे पर समानता	सम्पूर्ण समानता
प्रकृति	अस्थायी	स्थायी
हिस्सेदारी	विचारों की हिस्सेदारी	संसाधनों की हिस्सेदारी
उपस्थिति	आवाज की उपस्थिति	भौतिक उपस्थिति
आशयें	नीति में परिवर्तन	विशेष नहीं
वैधानिकता	सामान्य समझदारी	लिखित दस्तावेज

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

मीडिया द्वारा जनवकालत से, सम्बन्धित देशों के अनुभवों को बांटना तथा कुछ पहलुओं को स्पष्ट करना।

सत्र के विशेष उद्देश्य

- जनवकालत में मीडिया के महत्व का वर्णन
- मीडिया का चयन करते समय ध्यान देने योग्य तत्वों की पहचान
- विभिन्न देशों के मीडिया द्वारा जनवकालत के अनुभवों को बांटना

गतिविधियाँ	समय (मिनट)
गतिविधि 12.1 जनवकालत में मीडिया की आवश्यकता और महत्व	30 (30)
गतिविधि 12.2 मीडिया के चयन में ध्यान देने योग्य तत्व	60 (90)

अग्रिम तैयारी

- जनवकालत में मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में ऐसा कोई पुष्ट तरीका नहीं है जो हमेशा कारगर हो। हालांकि, मीडिया विशेषज्ञ मुद्दों को मीडिया में प्रकाशित तो कर सकते हैं लेकिन मीडिया द्वारा जनवकालत मात्र कुछ प्रकाशित करना नहीं है। जनवकालतकर्ताओं को 'कर के सीखो' के सिद्धान्त पर कार्य करना होगा। इस सत्र में यह आवश्यक है कि विभिन्न संदर्भों को बांटा जाये।
- विभिन्न देशों में मीडिया के सही व गलत इस्तेमाल के कुछ उदाहरण दें। यदि आप एक मुद्दे पर मीडिया का सर्वेक्षण कर उसके परिणामों को सहभागियों के साथ बाँट सकते हैं तो सत्र अधिक प्रभावी हो सकेगा। यदि आप यह प्रशिक्षण से पूर्व नहीं कर पायें हैं तो आप सहभागियों यह सुझाव दे सकते हैं कि वह अपने स्तर, कार्यशाला के पश्चात ऐसा करें।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 12.1 जनवकालत में मीडिया

संसाधन सामग्री 12.2 नेपाल में सामुदायिक वानिकी के मीडिया द्वारा विषय-वृत्तान्त पर केस स्टडी

अन्य सामग्री

गतिविधि 12.1 जनवकालत में मीडिया की आवश्यकता और महत्व

समय : 30 मिनट

- इस सत्र की शुरुआत एक छोटे से खेल से करें जिसको 'सेवन अप' खेल कहा जाता है। यह एक बहुत साधारण खेल है, जैसा नीचे दिया गया है:
 - सहभागियों को घेरे में खड़ा करें/बैठाये। सभी सुगमकर्ता इस खेल में शामिल हो सकते हैं।
 - खेल के नियमों को साफ तौर पर बताये। सीधा सा नियम है कि एक व्यक्ति एक से गिनती शुरू करेगा उसकी बायीं ओर वाला दो बोलेगा, अगला व्यक्ति तीन बोलेगा और इस तरह गिनती चलेगी। सातवां व्यक्ति सात की जगह पर 'अप' कहेगा। इसी तरह, बाद में जब भी सात का गुणज आयेगा (14, 21, आदि) या जब भी किसी अंक में सात आयेगा (17, 27 आदि) वह व्यक्ति जिसे वह संख्या बोलनी है वह इस संख्या को नहीं कहकर उसके स्थान पर 'अप' कहेगा।
 - खेल बहुत तेजी से चलना चाहिए किसी को भी सोचने का समय दिये बिना। जो भी व्यक्ति अप की जगह 7 बोलेगा वह खेल से बाहर हो जायेगा। जो धीरे बोलेगा या बोलने से पहले हिचकिचायेगा या सोचेगा तो वह भी खेल से बाहर हो जायेगा।
 - कई चक्र खेलें। सामान्यतः ज्यादातर लोग खेल से बाहर हो जायेंगे।

इस खेल की कई विधियां हो सकती हैं। कई चालाकियां भी हो सकती हैं लोगों से गलती करवाने के लिए। इसलिए जो सुगमकर्ता इस खेल को खिलाना चाहते हैं उन्होंने यह खेल पहले जरूर खेला हो।

- जनवकालत में मीडिया की भूमिका पर एक चर्चा शुरू करें। सत्र के प्रारम्भ में कुछ प्रश्नों को पूछें। वैकल्पिक प्रश्न निम्न हैं।
 - जनवकालत में हमें मीडिया की क्यों आवश्यकता है?
 - मीडिया की जनवकालत में क्या भूमिकाएँ हो सकती हैं?
 - जनवकालत में मीडिया का क्या महत्व है?
- मीडिया की आवश्यकता और महत्व पर एक संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण करें। इसके लिए आप सं.सा. 12.1 का प्रयोग करें।
- प्रस्तुति के आधार पर समूह चर्चा करें और चर्चा को सत्र के इस भाग की समय सीमा तक जारी रखें।

गतिविधि 12.2 मीडिया के चुनाव हेतु तत्त्व

समय : 1 घंटा

- इस प्रस्तुतिकरण के तुरन्त बाद आकस्मिक तरीकों द्वारा सहभागियों को चार समूहों में बांट दें। उनको एक केस स्टडी दें (सं.सा. 12.3) और उनसे पूछें कि उक्त केस में प्रयुक्त मीडिया जनवकालत की रणनीति में क्या कमियाँ हैं। उनको 20 मिनट केस को पढ़ने व छोटे समूहों में चर्चा करने के लिए दें।
- उनके बड़े समूह में लौटने के बाद उनसे केस की कमियों के बारे में पूछें। आप यह प्रश्न बारी-बारी सभी समूहों से पूछ सकते हैं।
- बोर्ड पर विचार बिन्दुओं को लिखें। यदि आपके पास कुछ समय बचता है तो समग्र चर्चा करें। सहभागियों को उत्साहित करें कि वे मीडिया द्वारा जनवकालत के अपने अनुभवों को बांटें।
- इस सत्र का समापन यह कह कर करें कि मीडिया की जनवकालत में व्यापक भूमिका होती है। लेकिन जनवकालतकर्ता को मीडिया का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। यह एक चुनौतिपूर्ण कार्य है।

गतिविधि 12.1 जनवकालत में मीडिया	समय : 15 मिनट
गतिविधि 12.2 मीडिया के चुनाव हेतु तत्त्व	समय : 1 घंटा

जनवकालत में मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में ऐसा कार्य पूरा करने का एक ही जगह है जो हमें मिलता है। हालांकि, मीडिया विशेषज्ञ गुदरने को मीडिया ने प्रभावित हो कर सकते हैं लेकिन मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में हमें एक ही जगह है जो हमें मिलता है। इन सत्रों में यह आवश्यक है कि हमें मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में एक ही जगह है जो हमें मिलता है।

विभिन्न देशों में मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में एक ही जगह है जो हमें मिलता है। यदि आप एक नुददे पर मीडिया का सर्वेक्षण कर सकते हैं तो मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में एक ही जगह है जो हमें मिलता है। यदि आप यह प्रतिक्रिया दे सकते हैं तो मीडिया के प्रयोग के संदर्भ में एक ही जगह है जो हमें मिलता है।

सत्र को विचार सावधानीपूर्वक समाप्त करें।

संसाधन सत्र 12.1 जनवकालत में मीडिया

संसाधन सत्र 12.2 मीडिया के चुनाव हेतु तत्त्व

अन्य सामग्री

12.1 जनवकालत में मीडिया

सर्वप्रथम, धारणात्मक स्पष्टता की आवश्यकता है इनके बीच भेद करने के लिए -

क. मीडिया द्वारा जनवकालत, और

ख. मीडिया द्वारा प्रचार या मीडिया के द्वारा जनता से सम्बन्ध

यदि मीडिया का प्रयोग केवल जनता में उक्त संगठन की छवि बनाने के लिए किया गया है तो समान्यतः यह जनवकालत नहीं हो सकती जब तक कि इस तरह के जन सम्बन्ध एक बहुत बड़ी रणनीति न हो, जो कि "मीडिया जनवकालत" की दिशा में कार्यरत हों। "मीडिया जनवकालत" जनता के बीच वार्तालाप बनाने हेतु मीडिया का उपयोग है जिससे कि अभिशासन की इस चौथी भुजा के द्वारा उनको प्रभावित किया जा सके जो कि नीति बना सकते हैं या किसी समूह के पक्ष में निर्णय ले सकते हैं। नीचे प्रस्तुत युक्तियाँ केवल मीडिया द्वारा जनवकालत के लिए हैं

मीडिया द्वारा जनवकालत की आवश्यकता

- दबाव बनाने के लिए शासन के चौथे अंग का उपयोग
- जन आन्दोलन करने के लिए
- लक्षित श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए दबाव बनाना
- जनता की सद्भावना पाने के माध्यम के रूप में
- एक मुद्दे को एक आन्दोलन बनाने का तरीका
- सहभागियों को एकत्र करने का तरीका
- कई लोगों तक संदेश भेजने का सीधा व सस्ता तरीका
- सत्ता का सन्तुलन बनाना

मीडिया के प्रकार

सभी प्रकार के मीडिया को दो समूहों में बांटा जा सकता है, जैसे (अ) संकुचित पहुँच वाला मीडिया, (ब) विस्तृत पहुँच वाला मीडिया। संकुचित मीडिया एक स्थानीय क्षेत्र तक ही सीमित होता है जबकि विस्तृत मीडिया सामान्यतः बहुत बड़े जन समूह तक पहुँचता है। संकुचित मीडिया स्थानीय स्तर पर ज्यादा प्रभावकारी होता है, जबकि विस्तृत मीडिया की पहुँच दूर तक होती है एवं यह वृहद स्तर पर प्रभावशाली होता है।

जनवकालत में मीडिया का प्रयोग करते समय विचारणीय बिंदु :

- प्रयोग से पूर्व, मीडिया का अनुश्रवण करें ; उस "अदृश्य" नीति या 'दिशा' का पता लगायें जो कि किसी मीडिया के प्रकार ने ली हुई है। अन्यथा, आप रणनीतिक सूचना गलत पक्ष को दे बैठेंगे या आप विरोधी विचार वाले मीडिया समूह को प्रभावित करने की असफल कोशिश कर दुर्लभ संसाधनों को व्यर्थ कर देंगे।

- प्रयोग के समय यदि कोई गलती है तो उसे सुधार लें, जब आवश्यक हो तब शीघ्रता से जवाब दें और उस मीडिया का समर्थन करें जो आपको मदद कर रहा है।
- सम्बन्धों को बनायें। मीडिया के पास तभी न जायें जब आपको कुछ चाहिए। उनके साथ दीर्घकालिक सम्बन्ध बनायें, जिससे कि वे आपको सूचना का एक भरोसेमंद और नियमित स्रोत समझें। जो सूचना आपके मुद्दे के साथ न जुड़ी हो वह भी उपलब्ध करायें; उनकी मदद करें महत्वपूर्ण सम्बन्धों/सूचनाओं द्वारा जिनकी उन्हें आवश्यकता हो; अच्छे कार्य के लिए उनकी प्रशंसा करें आदि। एक बार उनसे आपने अच्छे सम्बन्ध बना लिए तो वह आपके विचारों पर गौर करेंगे तथा उनको अपनी पत्रिका या कार्यक्रम में शामिल करेंगे।

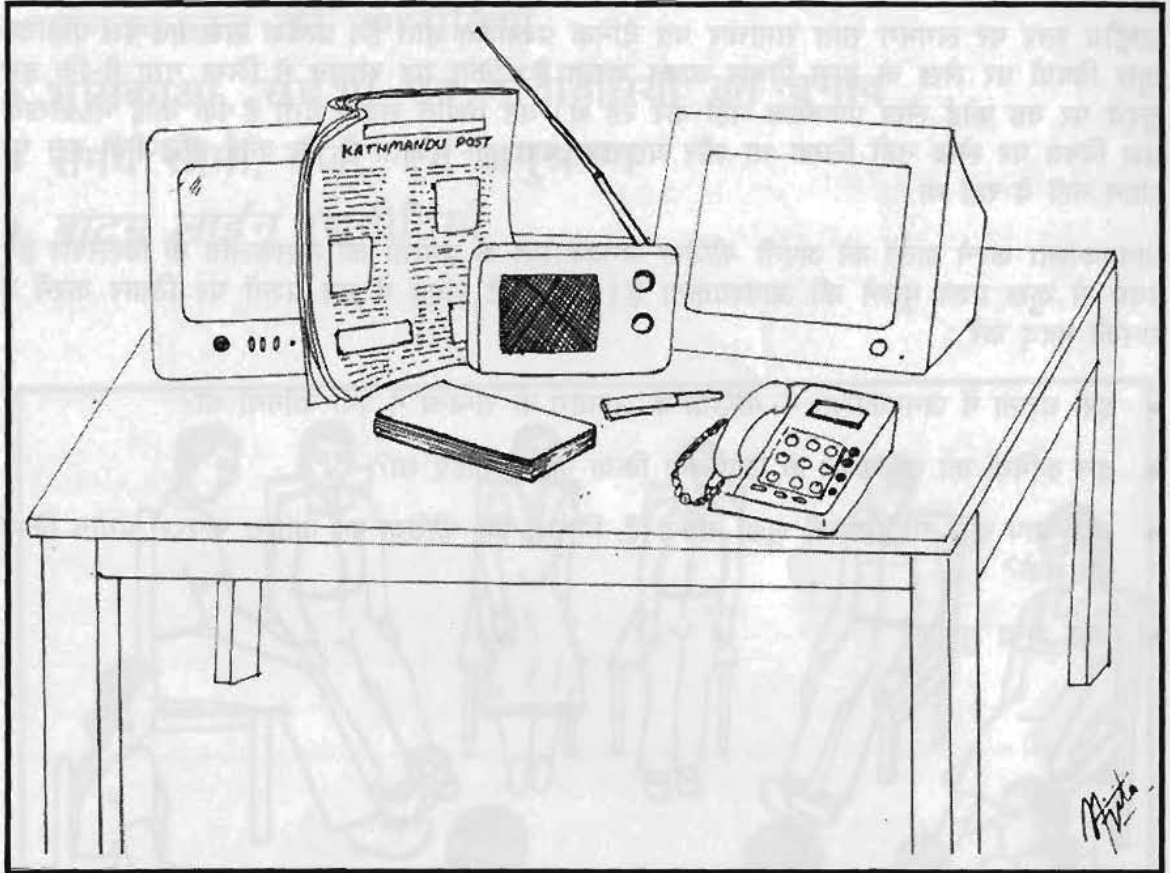
मीडिया का उपयोग करते समय कुछ युक्तियाँ

- मुख्य संदेश क्या है? और यह किसको देना है? क्या आप इसे इस रूप में बना रहे हैं कि ये उन तक पहुंचे जिनको आप प्रभावित करना चाह रहे हैं? मीडिया में जनवकालत के मुद्दे की प्रस्तुति का ढंग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मीडिया के लिए यह समाचार योग्य होना चाहिए। इसका अर्थ यह हो सकता है कि अपने विचारों को प्रकाशित करने के लिए समाचार योग्य अवसर की रचना करें (एक संवाददाता सम्मेलन कोई समाचार योग्य अवसर नहीं है, जबतक कि आपके पास देने के लिए कोई 'विस्फोटक' सूचना न हो। यदि कोई सूचना आपके लिए महत्वपूर्ण है, तो वह 'विस्फोटक' नहीं होती)। नीति निर्धारकों के लिए, आपको उनकी कमजोरी समझकर मुद्दे को इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि आप इन कमजोरियों पर प्रहार कर सकें। अपनी सत्य निष्ठा को ख़ाये बिना मुद्दे को प्रस्तुत करना— यह सफल मीडिया जनवकालत की चुनौती है।
- मीडिया की प्रसार क्षमता को पहचानें, और अपने संदेश को उनके अनुसार बनायें। यदि आप इस बिंदु पर ध्यान नहीं देंगे तो आपके संदेश का मुख्य भाग कट जायेगा। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि जो लेख आपने भेजा है वह बहुत लम्बा है तो सम्पादक इसका आधा भाग काट सकता है। यदि आपके मुख्य बिंदु लेख के दूसरे या बाद के भाग में हैं तो आपका मुख्य भाग कट जायेगा। परिणामस्वरूप, आपका लेख प्रकाशित हो भी गया तो, जो आप वास्तव में कहना चाहते हैं वह तो उसमें होगा ही नहीं। इसी तरह, जिस प्रकार के मीडिया को आप अपनी सामग्री भेज रहे हैं उसकी शैली को ध्यान में रखना होगा। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शैली लिखित मीडिया की तुलना में भिन्न हैं, और विभिन्न लिखित मीडिया में भी भिन्न लेखन शैलियों का प्रयोग होता है। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की शैली भिन्न होती है।
- क्या जिस मुद्दे पर आप कार्य कर रहे हैं उसके लिए यह सबसे अच्छा मीडिया है? और मीडिया के लिए कौन आपका सम्बन्ध व्यक्ति होगा?
- यदि मीडिया निमंत्रण आता है तो कौन व्यक्ति साक्षात्कार देगा? आप सहभागियों को अपने विचार व्यक्त करने को कहें।

जोखिम

- प्रतिकूल या असंतुलित विषय वृत्तांत— यह आवश्यक नहीं कि हर समय मीडिया का हर वर्ग आपके पक्ष में कार्य करे। कई बार जानबूझ कर या कई बार अनजाने में, वे प्रतिकूल विषय वृत्तांत प्रस्तुत कर सकते हैं।
- विरोधियों के एकत्रीकरण की सम्भावना— मीडिया के प्रयोग से आप यह जोखिम उठाते हैं कि रणनीतिक सूचना विरोधियों तक पहुंच सकती है।

- संवाददाताओं द्वारा गन्दा खेल— यह दिमाग में रखें कि सभी संवाददाता कुशल नहीं होते और कुछ में तो सत्यनिष्ठा की भी कमी होती है।
- मीडिया के व्यक्तियों द्वारा अवांछित लाभ लेने की सम्भावना। आप सहभागियों को अपने विचार/अनुभवों को बांटने को कहें।



12.2 नेपाल में सामुदायिक वानिकी के मीडिया द्वारा विषय-वृतांत पर केस स्टडी

नेपाल का सामुदायिक वानिकी कार्यक्रम दक्षिण एशिया के सफल प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन कार्यक्रमों में से एक है। आज तक, 13,000 यूजर ग्रुप्स (2,40,000 लोग) बन चुके हैं और नेपाल के समूचे वन क्षेत्र का लगभग 20 प्रतिशत भाग इन यूजर ग्रुप्स को हस्तान्तरित किया जा चुका है। प्रारम्भिक वर्षों में कार्यक्रम को बाहरी मदद से चलाया गया था। किंतु बाद में, नेपाल सरकार ने इसको एक राष्ट्रीय कार्यक्रम बना दिया है।

किंतु दुर्भाग्यवश, नेपाल सरकार ने हाल ही में यह निर्णय लिया है कि सामुदायिक वनों के यूजर ग्रुप्स की 40 प्रतिशत कमाई सरकार को जायेगी। लोग इस प्रकार के निर्णय की उम्मीद नहीं रखते थे, न ही यह वानिकी के वर्तमान नियमों और प्रावधानों हिस्सा था। किंतु, सरकार ने इस निर्णय को बड़ी चालाकी से व योजनाबद्ध ढंग से लागू कर दिया है।

इस निर्णय के लागू होने के तुरन्त बाद FECOFUN, एक नागर समाज संगठन, जो कि यूजर ग्रुप्स के अधिकारों की रक्षा हेतु कार्यरत हैं, ने इसके विरोध में जनवकालत प्रारम्भ की। यह सुनिश्चित

करते हुए कि यह आन्दोलनात्मक रूप ले लें। यह आन्दोलन पिछले दो सालों से चल रहा है और अभी भी जारी है। इस मुद्दे पर कार्यशालायें, गोष्ठियाँ और वार्तालाप विभिन्न स्तरों पर चल रहे हैं।

नेपाल में, कई समाचार पत्र विभिन्न शहरों से प्रकाशित हो रहे हैं। जब FECOFUN ने राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करे तो कुछ आखबारों ने इस मुद्दे का विवरण दिया, किंतु प्राथमिक कालम में नहीं। यह खबर समाचार पत्र के कम प्राथमिकता वाले भाग में प्रकाशित हुई।

राष्ट्रीय स्तर पर लगभग सात समाचार पत्र दैनिक प्रकाशित होते हैं। प्रत्येक समाचार पत्र प्रतिदिन कुछ विषयों पर लेख के द्वारा विचार व्यक्त करता है। किंतु यह संज्ञान में लिया गया है कि इस मुद्दे पर वह कोई लेख प्रकाशित नहीं कर रहे थे। यह स्थिति संकेत देती है कि कोई भी लेखक इस विषय पर लेख नहीं लिखा था और यह इस बात को दर्शाता है कि कोई बुद्धिजीवी इस पर ध्यान नहीं दे रहा था।

जनवकालत करने वालों को अपनी मीडिया जनवकालत के प्रयासों की असफलता के विश्लेषण हेतु स्वयं से कुछ प्रश्न पूछने की आवश्यकता है। एक छोटे समूह में इन प्रश्नों पर विचार करने में उनकी मदद करें :

- इस घटना में जनवकालत में मीडिया के उपयोग के सम्बन्ध में क्या कमियाँ थीं?
- इन कमियों को दूर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए था?
- क्या आप कुछ गतिविधियाँ सुझा सकते हैं, जिससे कि मीडिया का वांछित रूप से प्रयोग किया जा सके?
- कोई अन्य सुझाव?

किस प्रकार समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को अपनी भूमिका निभाने में सक्षम बनाया जा सकता है—इसकी जांच प्रशिक्षण के किर्त्तित कर्मीकरण में शामिल है।

इस मुद्दे पर आधुनिक विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए यह सप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल तैयार किया गया है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल तैयार किया गया है।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल तैयार किया गया है।